Answers to RHB/Set-2

खंड–'क' (अपठित बोध)

1. (*i*) (ग) समाज से

(*ii*) (ख) कथन और कारण दोनों सही हैं।

(*iii*) (घ) उपर्युक्त सभी

(*iv*) समाज की परंपराओं, मान्यताओं, रहन-सहन, भाषा, धर्म, कला, संगीत, रीति-रिवाज और जीवनशैली में समय के साथ आने वाला परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन कहलाता है। इसके अंतर्गत बाहरी प्रभावों या आंतरिक विकास के कारण समाज की संस्कृति प्रभावित होती है। उदाहरण के लिए युवाओं द्वारा पश्चिमी जीवनशैली को अपनाना।

(*v*) सांस्कृतिक परिवर्तन समाज को आधुनिक, प्रगतिशील और सहिष्णु बनाता है। इससे महिलाओं एवं वंचितों को अधिक अधिकार, शिक्षा के अवसर और स्वतंत्रता मिलती है तथा जातिवाद और रूढ़िवादिता जैसी बुराइयों में कमी आती है। सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण मूल्य, भाषा, लोककला और रीतिरिवाज समृद्ध होते हैं।

2. (*i*) (घ) उपर्युक्त सभी

(*ii*) (ख) कथन और कारण दोनों सही हैं।

(*iii*) (घ) उपर्युक्त सभी

(*iv*) स्वास्थ्य एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्णतः सक्षम होता है। आरोग्य एक व्यापक शब्द है जिसका संबंध केवल शरीरिक तंदुरुस्ती से नहीं, बल्कि मानसिक संतुलन, आत्मिक शांति और नैतिक जीवन शैली से होता है। यह व्यक्ति को संपूर्ण रूप से स्वस्थ्य, संतुलित और आत्मनिर्भर बनाता है।

(*v*) स्वस्थ जीवन के लिए संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद, स्वच्छता और मानसिक संतुलन आवश्यक है। यदि हम समय पर पौष्टिक भोजन करें, रोजाना कुछ समय योग, प्राणायाम या हल्का व्यायाम करें और जीवन में सकारात्मक सोच अपनाएँ तो लंबे समय तक निरोग रह सकते हैं।

खंड–'ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

3. (*i*) संज्ञा पदबंध

(*ii*) तारा सुंदरी पार्क में बड़ा-बाज़ार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए। इस वाक्य में 'झंडा फहराने गए' क्रिया पद है।

(*iii*) सर्वनाम पदबंध

(*iv*) अद्भुत दैवीय – विशेषण पदबंध

(*v*) क्रियाविशेषण पदबंध – जिसके तहत अपनी मंज़िल तक

उदाहरण – शैलेंद्र के गीतों से सिर्फ़ करुणा नहीं, जूझने का संकेत भी था और वह प्रक्रिया भी मौजूद थी जिसके तहत अपनी मंजिल तक पहुँचा जाता है।

4. (*i*) संयुक्त वाक्य

(*ii*) सरल वाक्य

(*iii*) जो चंद लोग उनमें व्यावहारिकता का थोड़ा-सा ताँबा मिलाते हैं वे ही उनको चलाकर दिखाते हैं।

(*iv*) स्वतंत्र वाक्य– चाजीन ने अँगीठी सुलगाई

स्वतंत्र वाक्य– और उस पर चायदानी रखी

दो स्वतंत्र वाक्य 'और' समुच्चयबोधक अव्यय द्वारा आपस में जुड़ें हुए हैं।

(*v*) हमें केवल वर्तमान में जीना चाहिए क्योंकि वही सत्य है। यहाँ प्रधान उपवाक्य 'क्योंकि' योजक शब्द द्वारा आश्रित उपवाक्य से जुड़ा हुआ है।

5. (*i*) विशेषता – द्वंद्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। उदाहरण – गुरु-शिष्य

(*ii*) समस्त पद में दो पद होते हैं– 'पूर्व पद' तथा 'उत्तर पद' जबकि सामान्य पद वाक्य में प्रयुक्त शब्द को कहते हैं जो व्याकरणिक नियमों से बंधा होता है।

(*iii*) सप्ताह

वाक्य प्रयोग – सप्ताह में एक दिन उपवास अवश्य रखना चाहिए।

(*iv*) विग्रह – देह रूपी लता, भेद – कर्मधारय समास

(*v*) पूर्व पद – पंच, उत्तर पद – आनन

पाँच हैं आनन (मुख) जिसके अर्थात् शिव बहुव्रीहि समास

6. (*i*) खाल खींचने

(*ii*) आँखों में धूल झोंक

(*iii*) दीवार खड़ी करना– मानव का भ्रम ही उसके सत्य के मध्य दीवार खड़ी कर देता है।

(*iv*) अँधियारा मिटना – अज्ञानता रूपी अंधकार दूर होना।

निराशा के बादल छँटना – उदासी दूर होना

(*v*) अंग्रेजी सीखने के लिए रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं।

खंड–'ग' (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)

7. (*i*) (घ) शैलेंद्र द्वारा जिस फ़िल्म का निर्माण किया गया वह उनके जीवन की केवल एक ही फ़िल्म थी।

(*ii*) (ग) वे असमंजस में थे।

(*iii*) (ख) कथन तथा कारण दोनों सही हैं।

(*iv*) (घ) 'तीसरी कसम' फ़िल्म से संबंधित जानकारियों की।

(*v*) (ग) कुछ समझ में न आना

8. (*i*) गांधी जी एक व्यवहारवादी आदर्शवादी थे। वे जानते थे कि व्यावहारिकता क्या होती है इसलिए वह अपने आदर्शों को इतनी सरलता से चला पाए। गांधी जी ने कभी भी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर नहीं उतारा। बल्कि वे व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।

(*ii*) पाठ 'डायरी का एक पन्ना' में स्वतंत्रता सेनानी सीताराम सेकसरिया जी ने तिरंगे झंडे से सजे कलकत्ता के सुंदर दृश्य का वर्णन किया है। लोग इस सुंदरता को हमेशा के लिए कैद करने के लिए फोटो उतार रहे थे और दूसरी ओर जब अंग्रेज़ों का दमन-चक्र आरंभ हुआ तो उन्होंने लाठी चार्ज करना शुरू किया। किसी का माथा फूटा तो किसी के सर से लहू बहा। उनकी इस क्रूरता को एक दस्तावेज के रूप में भावी पीढ़ी के लिए संजोकर रखने के लिए डॉ० दासगुप्ता चोटिल व्यक्तियों की फोटो उतरवा रहे थे ताकि आने वाली पीढ़ी यह समझ पाए कि यह स्वतंत्रता उन्हें इतनी आसानी से प्राप्त नहीं हुई। उसके लिए न जाने कितने लोगों को खून बहाना पड़ा है।

(*iii*) संसार में विविध धर्म के लोग रहते हैं। उन सबकी अपनी-अपनी मान्यताएँ हैं जैसे–लेखक की माँ की मान्यता थी दरिया को सलाम करना, मुर्गे को परेशान न करना, शाम के समय फूल-पत्ते न तोड़ना। ठीक ऐसे ही लेखक भी कहते हैं कि हर व्यक्ति अपनी श्रद्धा और भक्ति के अनुसार अपने-अपने ईश्वर को याद करता है। जैसे मौलवी का काम मस्जिद जाकर अपने ईश्वर को याद करना है और कोयल का काम मीठे गीत गाना है, ठीक वैसे ही सबका लक्ष्य केवल एक ही है और वह है सच्चे ईश्वर को याद करना और मानवता का धर्म निभाना।

(*iv*) वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था। वह अपने चाचा से धोखा खाने के बाद भी हिम्मत नहीं हारता। अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर कंपनी के खिलाफ बगावत छेड़ देता है। वह इस बात से भी नहीं डरता कि अंग्रेजों की इतनी बड़ी सेना के समक्ष उसकी हैसियत कुछ भी नहीं। उसके साहस का प्रमाण नाटक के अंत में मिलता है जहाँ वज़ीर अली बिना किसी हथियार के कर्नल के खेमें में प्रवेश करता है और अपना नाम भी बता देता है। अपने सामने वज़ीर अली को खड़ा हुआ देखकर कर्नल हक्का-बक्का रह जाता है। इससे यह पता चलता है कि वज़ीर अली अपने हक की लड़ाई के लिए कितनी बहादुरी से लड़ रहा था।

9. (*i*) (घ) पर्वतों के लिए गौरव गीत गा रहे हैं।

(*ii*) (ग) प्रकृति का प्रत्येक उपादान अपने अनुसार क्रिया कर रहा है।

(*iii*) (ग) कथन सही है और कारण कथन की सही व्याख्या है।

(*iv*) (ख) हृदय

(*v*) (ग) हृदय में रहने वाली आकांक्षाएँ आसमान छूना चाहती हैं।

10. (*i*) मीरा के पद में वर्णित 'चाकरी' शब्द अपने आप में एक सौंदर्यपूर्ण विचार को प्रस्तुत करता है। मीरा रजवाड़ों में पली-बड़ी थीं, रानी थीं। उन्हें एक 'चाकर' का महत्व मालूम था। एक चाकर चौबीसों घंटे अपने स्वामी के समीप रहता है। अपनी अच्छी सेवा-भक्ति के कारण उसको बहुत कुछ प्राप्त होता है। मीरा यह सब जानती थी इसलिए वे श्रीकृष्ण की चाकरी करके उनका सान्निध्य और दर्शन प्राप्त करना चाहती हैं।

(*ii*) कबीर गुरु को जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग मानते हैं। उनके अनुसार गुरु अज्ञानता के अंधकार से मुक्ति दिलाकर ज्ञान रूपी प्रकाश प्रदान करता है। गुरु विकारों से भरे अंधकारमय मन को ज्ञान रूपी मशाल से जलाकर मोक्ष प्रदान करता है।

(*iii*) प्रस्तुत गीत भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। यह गीत 1964 में बनी फ़िल्म 'हकीक़त' में अत्यत भावपूर्ण ढंग से फ़िल्माया गया है। युद्ध की विभीषिका के साथ-साथ बलिदानमय पथ पर अग्रसर होने के लिए इस गीत में युवा सैनिकों को प्रेरित किया गया है।

(*iv*) 'तोप' आज़ादी के संघर्ष में स्वतंत्रता सेनानियों की आवाज़ को दबाने के लिए अंग्रेज़ों के सबसे शक्तिशाली हथियार के रूप में प्रयोग की गई थी। इस कविता में निहित व्यंग्य है कि जिस तोप ने बड़े-बड़े सूरमाओं को भी मौत के घाट उतार दिया था वही आज शक्तिहीन होकर चिड़ियों और बच्चों का खिलौना तथा प्रदर्शन की वस्तुमात्र बनकर शांत पड़ी हुई है।

11. (*i*) 'हरिहर काका' पाठ में हरिहर काका एक बुजुर्ग व्यक्ति हैं जिनके परिवार में उनके दो और भाई भी हैं। हरिहर काका की पत्नी और बच्चे नहीं थे। अपने हिस्से की 15 बीघा ज़मीन वह अपने भाइयों को सौंपकर निश्चिंत थे किंतु भाइयों की पत्नियों के हाथों प्रताड़ित होने के कारण वह क्रोध में आ जाते हैं। परिणामतः अपनी दयनीय दशा को समाज के सामने व्यक्त करते हैं। उनकी संपत्ति का फायदा उठाने के लिए महंत जैसे लोग और उनके अपने भाइयों के रक्त-संबंध भी श्वेत पड़ जाते हैं।

वर्तमान में भी यह देखने को मिलता है। यह पाठ आज के समय में भी प्रासंगिक दिखाई देता है जिसका कारण है कि बच्चे पढ़-लिखकर बाहर विदेशों में चले जाते हैं। माँ-बाप को यहाँ अकेला छोड़ जाते हैं और बुजुर्ग एकाकी जीवन जीने पर मजबूर हो जाते हैं। कई बार तो यही बच्चे जिन्हें अपने रक्त से सिंचित किया गया था, धोखे से संपत्ति बेचकर इन्हें बेसहारा वृद्ध-आश्रम में छोड़कर चले जाते हैं। वास्तव में आज भी समाज में हमारे बुजुर्गों की यही दयनीय दशा देखने को मिलती है।

(*ii*) बचपन के सबसे अविस्मरणीय पल गर्मी की छुट्टियाँ होती हैं। जिसमें बच्चे अपनी मनमानी करते हैं। अपनी पसंदीदा जगह घूमने जाते हैं। खूब खेलते हैं। सबसे खास होता है गर्मी की छुट्टियों का गृहकार्य जो बच्चे

खेलकूद में करते ही नहीं लेखक की तरह सवालों और दिनों के मध्य के अंतर की गणना करते हैं। ये पल किसी भी बच्चे के लिए जीवनपर्यंत अविस्मरणीय रहते हैं। मेरे मन के भीतर भी यही गर्मी की छुट्टियों के दिन सबसे अविस्मरणीय पल हैं। जिन्हें मैं कभी भी भूलना नहीं चाहती/चाहता।

(*iii*) बचपन के दिन किसी भी बच्चे के लिए उसके जीवन के सबसे सुंदर पल होते हैं। ऐसे में इफ़्फ़न की दादी जैसे ज़मींदार परिवार में सुख और सुविधाओं से रहने वाले पल तो स्वर्गीय सुख देते हैं। अपने मायके में उन्होंने जितने आनंद से जीवन व्यतीत किया उतना उन्होंने इफ़्फ़न के दादा के यहाँ नहीं किया। यहाँ हर बात में पाबन्दी थी जबकि मायके में दूध-घी-दही की नदियाँ बहती थीं। यही कारण है कि पाठ 'टोपी शुक्ला' में इफ़्फ़न की दादी के जीवन के अंतिम क्षणों में भी वे अपने मायके के उन खूबसूरत पलों को विस्मृत नहीं कर पायीं।

इफ़्फ़न के पिता ने जब उनकी अंतिम साँसों के समय उनसे पूछा कि उन्हें कहाँ दफ़नाया जाएगा तो उन्होंने उलाहना मारते हुए कहा कि यदि उनके बस की न हो तो उनके मायके में खबर कर दी जाए। पिता ने प्रश्न इसलिए पूछा था क्योंकि इफ़्फ़न के दादा ने इस देश को कभी अपना घर समझा ही नहीं था। इसलिए उन्होंने अपने अंतिम क्षणों में स्वयं को कर्बला में दफ़नाने की इच्छा ज़ाहिर की थी।

खंड–'घ' (रचनात्मक लेखन)

12. (क) **वोकल फॉर लोकल**

वोकल फॉर लोकल भारत को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने का भारत सरकार का एक बहुत ही बड़ा उपक्रम है। भारत की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए 'मेक इन इंडिया' परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए इस मुहिम को शुरू किया गया है। इसके मुख्य बिंदुओं में से एक है – अपने व्यवसाय को, अपने उत्पाद की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए अनुसन्धान तथा विकास में निवेश करना; अंतरर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय अर्थव्यवस्था को और भी सुदृढ़ करना; इसके साथ-साथ अपने उत्पाद को इस प्रकार बनाना कि वह पर्यावरण के अनुकूल रहे। व्यवसाय में जहाँ नेटवर्किंग एक बहुत बड़ा माध्यम होती है उसी के लिए इसको नाम दिया गया वोकल फॉर लोकल। इसका लक्ष्य अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारत की उन्नति को बढ़ाना तथा संयुक्त उद्यम और साझेदारों को चाहे वह छोटे ही क्यों न हों, उनको बाजार में चलन में लाना ताकि वह अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को इसका अत्यधिक लाभ होगा क्योंकि यह कृषि से लेकर छोटे-छोटे उद्योगों को मज़बूती प्रदान करेगा। 'एक जिला एक उत्पाद' का सुंदर उदाहरण है – कर्नाटक में बनने वाले लकड़ी के सुंदर खिलौने। इस मिशन से जो भी लघु अथवा कुटीर उद्योग या ग्रामीण उद्योग लगाए गए हैं उन्हें मज़बूती मिलेगी तथा साथ ही अपना उत्पादन, अपना बाजार, अपनी आय, आत्म-निर्भरता का संकल्प भारत को वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान दिलाएगा।

(ख) **बढ़ते शहर घटते गाँव**

शहरों के बढ़ने और गाँवों के घटने के कारण भारत का ग्रामीण परिवेश संकट में आ गया है और इससे भी बड़ा संकट है-शहरी जीवन में बढ़ती हुई चुनौतियों का। रोज़गार के अवसर कम होने के कारण ग्रामीण लोग नए सपने लेकर शहरों की ओर कदम बढ़ाते हैं। गाँव से यह पलायन शहरों की भीड़ को बढ़ाता है। एक रिपोर्ट के अनुसार 2050 तक भारत की आधी आबादी शहरों में रहने लगेगी और गाँवों का अस्तित्व संकट में आ जाएगा। भारत एक कृषि प्रधान देश है और यदि ऐसा हुआ तो यह कृषि प्रधान देश जो अनाज का कटोरा भी कहा जाता है संकट में पड़ जाएगा। जनसंख्या के बढ़ने के कारण स्वास्थ्य समस्याएँ, पर्यावरण से जूझने वाले संकटों और शहरों में बढ़ती हुई झोंपड़ पट्टियों के कारण दैनिक सुविधाओं के अभाव में ग्रामीण बहुत-सी बीमारियों का भी शिकार हो जाते हैं। अतः भारत की अर्थव्यवस्था को एक नया रूप देना आवश्यक है। जिसमें

गाँवों का अस्तित्व बना रहे और शहरों में असंतुलन न हो। इसके लिए ऑर्गनिक फार्मिंग, तथा अन्य कृषि योजनाओं और तरीकों से ग्रामीणों को शिक्षित भी किया जा रहा है

(ग) **योग से ही मोक्ष**

भारतीय संस्कृति में 'योग' का महत्वपूर्ण स्थान है। यह एक ऐसी क्रिया है जिसमें व्यक्ति अपनी इंद्रियों को वश में करके लाभ ही नहीं मोक्ष भी प्राप्त कर सकता हैं। भारतीय संस्कृति में चार प्रकार के योग कहे गए हैं जिसमें कर्म योग, भाव योग, ज्ञान योग और क्रिया योग की बात कही गई है। योग से स्वास्थ्य लाभ भी होता है जिससे हमारा पाचन तंत्र स्वस्थ होता है। इसके साथ ही हमारा स्नायु-तंत्र, श्वास-तंत्रियाँ भी पुष्ट होती हैं। शरीर में लगने वाली बहुत-सी बीमारियाँ योग के कारण दूर हो जाती हैं। कोरोना काल में भारत ने योग के माध्यम से विश्व गुरु की भूमिका निभाई। योग से मानसिक और शारीरिक संतुलन प्राप्त किया जा सकता है। इससे माँसपेशियाँ मजबूत होती हैं और व्यक्ति, प्रसन्नचित्त रहता है। योग्य से मोक्ष की प्राप्ति संभव है क्योंकि हमारा अष्टचक्र भी इसी प्रक्रिया का एक हिस्सा है। यह ऊर्जा जब मनुष्य को प्राप्त होती है तो वह ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है ऐसा शास्त्रों में लिखा गया है। इसलिए योग मोक्ष तक ले जाने की एक महत्वपूर्ण सीढ़ी है।

13. (क) परीक्षा भवन

अ०ब०स० विद्यालय

य०र०ल० नगर

दिनांकः 20.07.20XX

सेवा में

संपादक महोदय

दैनिक जागरण

गुजरात

विषय- नीति आयोग के प्रयासों से युवाओं का भविष्य उज्ज्वल।

महोदय

मैं सुधाकर पश्चिम विहार, गुजरात का निवासी हूँ। मुझे यह कहते हुए अत्यंत गर्व की अनुभूति हो रही है कि मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र का नियमित पाठक हूँ

भारत सरकार के एक उपक्रम नीति आयोग को देश में बच्चा-बच्चा जानता है। इस संस्था ने अपने प्रयासों से युवाओं को डिजिटल साक्षरता तो प्रदान की ही है साथ ही कंप्यूटर और तकनीकी के क्षेत्र में दिए जाने वाले प्रशिक्षण से उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की नींव भी रखी है। आज भारत में व्यावसायिक शिक्षण के फलस्वरूप बहुत से स्टार्ट-अप खोले जा रहे हैं जो केवल युवाओं को ही नहीं भारत की अर्थव्यवस्था को भी मज़बूती प्रदान कर रहे हैं। वह दिन दूर नहीं जब भारत तकनीकी के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली बहुत-सी वस्तुओं को आयात नहीं निर्यात करेगा। मैं इस संदर्भ में आपके समाचार-पत्र के माध्यम से नीति आयोग का धन्यवाद करना चाहता हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि मेरा यह पत्र आप अपने समाचार-पत्र में अवश्य प्रकाशित करेंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

सुधाकर

ए-12, पश्चिम विहार

गुजरात

अथवा

(ख) परीक्षा भवन
अ०ब०स० विद्यालय
य०र०ल० नगर
दिनांक : 02 सितंबर, 20xx
सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
क०ख०ग० विद्यालय, रोहिणी
नई दिल्ली
विषयः 'भारतीय भाषा उत्सव' में नुक्कड़ नाटक प्रस्तुति की अनुमति हेतु।
महोदय
सविनय निवेदन है कि मैं निशा सांस्कृतिक विभाग की रंगमंच शाखा की अध्यक्ष तथा कक्षा दसवीं की छात्रा हूँ।
आपको विदित होगा कि इस वर्ष भारतीय भाषा उत्सव मनाया जा रहा है। हम रंगमंच के विद्यार्थी एक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करना चाहते हैं। जिसमें 'मेरी भाषा मेरी पहचान' का संदेश दिया जाएगा।
बच्चों को अपनी भाषा के गौरव और महत्व को समझाने के लिए यह नुक्कड़ नाटक मनोरंजन के साथ-साथ जानकारी भी प्रदान करेगा। हमारा यह नुक्कड़ नाटक केवल 4-5 मिनट में प्रार्थना सभा में संपन्न हो जाएगा अतः आपसे निवेदन है कि आप इस नुक्कड़ नाटक के प्रदर्शन हेतु अनुमति प्रदान करें।
धन्यवाद
भवदीया
निशा
अध्यक्ष
सांस्कृतिक विभाग
(शाखा-रंगमंच)

14. (क)

नगर निगम, नई दिल्ली

सूचना

'गीले और सूखे कूड़े के साथ-साथ घातक कूड़े' के निपटान हेतु सार्वजनिक सभा का आयोजन

दिनांक : 08 सिंतबर, 20xx
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पर्यावरण संरक्षण का कर्तव्य निभाते हुए नगर निगम एक सार्वजनिक सभा का आयोजन आपके क्षेत्र में करने जा रहा है। आप सभी सादर आमंत्रित है। इस कार्यक्रम की जानकारी इस प्रकार से है—
तिथि : 10 सिंतबर, 20xx (रविवार) समय : प्रातः 11 : 30 बजे
विषय : कूड़े का निपटान (गीला, सूखा तथा घातक कूड़ा)
आकर्षण : कूड़ेदान का वितरण

मुख्य अधिकारी
नगर निगम, नई दिल्ली

अथवा

(ख)

नीलांजलि सोसाइटी, नई दिल्ली

सूचना

जागरूकता अभियान – 'नदियाँ हैं तो हम हैं'

दिनांक : 12 सितंबर, 20xx

सभी निवासियों को सूचित किया जाता है कि जीवन रेखा नदियों के संरक्षण हेतु सोसाइटी में एक जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। आप सभी सादर आमंत्रित है। इस कार्यक्रम की जानकारी इस प्रकार से है–

तिथि : 17 अक्टूबर, 20xx (रविवार) समय : प्रातः 11 : 00 बजे

विषय : नदियाँ हैं तो हम हैं

आकर्षण : बच्चों द्वारा जागरूकता संबंधी कार्यक्रम की प्रस्तुति

सचिव

नीलांजलि सोसाइटी, नई दिल्ली

15. (क)

नशामुक्त जीवन हो युवा का, सुंदर जीवन हो हर व्यक्ति का

जागो युवा जागो,
भारत का निर्माण करो
नशामुक्त जीवन करके,
देश के निर्माता बनो।

मानव कल्याण संस्था द्वारा युवाहित में जारी

अथवा

(ख)

कार्बन मुक्त जीवन

बिजली के उपकरणों को, किफ़ायत से चलाओ।
प्यारी-प्यारी वसुंधरा को, मिलकर सभी बचाओ॥
चलो सभी मिलजुलकर, कार्बन का करें प्रबंधन।
मानव जीवन हो सुरक्षित, धरा का करें सब वंदन॥

भारत सरकार द्वारा जनहित में जारी

16. (क) मेले में बहुत भीड़ थी, पर सभी लोग मेला घूमने का आनंद उठा रहे थे कि अचानक अफरा-तफरी मच गई और लोग इधर-उधर भागने लगे। कुछ लोग जोर-जोर से चिल्लाने लगे। सब एक दूसरे से पूछने लगे कि क्या हुआ? तभी भीड़ से आवाज आई, "चोर! चोर!"

कुछ शरारती तत्वों ने भीड़ का फायदा उठाकर कई लोगों की जेब काट ली थी। एक महिला की थैली से पर्स गायब हो गया। तो कुछ लोगों के जेब से मोबाइल निकल गए थे। लोग डर गए और भगदड़ मच गई। कुछ लोगों के सामान खो गए, तो कुछ गिर पड़े। बच्चे अपने माता-पिता से अलग हो गए। मेला प्रशासन और सुरक्षाकर्मी तुरंत स्थिति को सँभालने पहुँचे लेकिन भीड़ इतनी ज्यादा थी कि उसे नियंत्रित करना मुश्किल हो रहा था।

मेला प्रशासन की टीम और पुलिस अधिकारी के संयुक्त प्रयास से कुछ समय बाद स्थिति नियंत्रण में आ गई और लोग फिर से मेला घूमने लगे। अब लोग ज्यादा सतर्क हो गए थे। बच्चे अपने माता-पिता के साथ हाथ में हाथ डाले मेला देख रहे थे। प्रशासन ने मेला परिसर की निगरानी बढ़ा दी। सभी ने महसूस किया कि खुशी का आनंद तभी संभव है जब हम सावधान और सतर्क रहें।

अथवा

(ख) प्रेषक Pqr@gmail.com

प्राप्तकर्ता eci@gmail.com

प्रतिलिपि(सी०सी०) abc@gmail.com

गोपनीय प्रतिलिपि (बी०सी०सी०) xyz@gmail.com

विषयः चुनावों में धन के अपव्यय को रोकने हेतु सुझाव देने के संदर्भ में।

अधिकारी महोदय

नमस्कार

मै भारत का एक कर्तव्यनिष्ठ नागरिक हूँ। आपके संज्ञान हेतु मैं उपर्युक्त विषय पर अपने विचार प्रकट करना चाहता हूँ। पिछले कुछ समय से भारत की राजनीतिक पार्टियाँ चुनाव प्रचार के दौरान चुनावी संकल्पों के साथ-साथ अत्यधिक धन का अपव्यय करती दिखाई दे रही हैं।

धन का स्रोत कई बार कालाबाज़ारी से प्राप्त धन भी होता है। इतने अधिक धन को केवल चुनाव जीतने के लिए व्यर्थ में पानी की तरह बहा दिया जाता है। यदि इसी धन का उपयोग नयी-नयी योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु तथा रोजगारों के लिए नव उद्योंगों के निर्माण में खर्च किया जाए तो भारत की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी दूर हो जाएगी।

आपसे निवेदन है कि निष्पक्ष चुनावों की सफलता हेतु धन के अपव्यय पर लगाम लगानी ज़रूरी है।

आशा करता हूँ कि आप विषय की गंभीरता और उपोदयता को समझते हुए उचित निर्णय लेंगे।

सधन्यवाद

जुगल किशोर वागले